प्रभु मिलन की अनुभूति १८.०१.२०१०

ओम शांति,
अब हम सभी अपने स्वर्ण अवसर का सम्पूर्ण लाभ उठाएंगे ।। कितना सुंदर मोका हम सब के सामने है लम्बे समय परमातम संग में बैठ ने का अवसर। आज के वरदानी दिवस पर उनसे वरदान प्राप्त करने का सुनेहरा मोका सभी अपने से बातें करे हम बाबा से आज कम से कम कोई एक वरदान, वरदान के रूप में स्वीकार करेंगे, और अपनी कोई एक कमजोरी जो आगे बढ़ने से रोक रही हो उसको बाबा के हवाले कर देंगे तो हम सब तैयारी करेंगे सभी जानते है जिनसे हमे मिलना होता है अपने सिस्टर को, अपने लेवल को को ऊँचा उठाना होता है अपने सामान हम परमातम मिलन की सुखद अनुभूति की और चल रहे है हमारा आध्यात्मिक स्तर, हमारी मनोस्थिति, हमारी बुद्धि की स्वच्छता जितनी सामान होगी, महान होगी उतना ही यह प्रभु मिलन हमारे लिए वरदान साबित होगा।
तो सभी अब संकल्प कर ले जनम-जनम हम सिर्फ दुसरो से ही बातें करते आये है आज अपने से बातें करेंगे और उस से बातें करेंगे जो हम से बातें करने आ रहे है परम आत्मा को प्यार का सागर को अपने प्यारी आत्माओ से जो बातें करते है उसका हम संपूर्ण सुख लेंगे ।। तो हम इस घंटे के सेशन में कुछ बहोत अछे अभ्यास भी करेंगे और हम सभी पिछले कई दिनों से बाबा की कहानी सुनते आ रहे है बाबा की कहानी सुनाने का यहाँ लक्ष्य होता है हम उनके जीवन से कुछ सिख ले, प्रेरणाए प्राप्त कर ले और उन जैसी ही तपस्या कर के अपने को वोह महान स्थिति में स्थित करें.
आज सवेरे के मुरली भी सभी के कानो में गूंज रही होगी जिसमे ब्रह्मा-बाबा की दो मुख्य खूबियों का वर्णन किया गया और हम परोपकारी बने इस पर बाबा ने बहोत ध्यान दिलाया तो में आपके सामने बाबा की कुछ और बातें रख देता हु सब ने अपनी अपनी बातें सुनाई है ब्रह्मा-बाबा जो की संसार की पहले नंबर की आत्मा है नेक्स्ट टु गॉड ।। जिसको इस संसार में श्री कृष्ण के रूप में भगवान् ही माना जाता है जो सच मुच बाप सामान बन गए उनको इस धरा पर ही अनेक उनके बच्चो ने फरिस्ते स्वरुप में देखा डबल लाइट देखा में उनकी कुछ ज़ल्किया जो मुझे बहोत आकर्षित करती रही है बचपन से वोह आप के सामने रख दू।।
बैगरि पार्ट- चारसो बाबा के बच्चे और बैगरि पार्ट सबसे बड़ी परीक्षा बाबा के सामने- किसी को बीमारी हो रही है दवाई नहीं, ठण्ड बहोत पड़ रही उस तरीके के कपडे नहीं।। ऐसे में एक बल एक भरोसे का सर्व श्रेष्ठ उदाहरण- ब्रह्मा-बाबा- जिन्होंने सब को संभाला, सब की स्थितियों को संभाला ।।
सब जानते है की एक छोटे से घर में यदि दो दिन भोजन ना रहे तो घर के मालिक की क्या मनोस्थिति हो जाती है और बाबा के सामने तो बहोत बड़ा चैलेंज था लोग भी बहोत कुछ कहेंगे और कहते थे और सब को संभालना भी था बहोत बड़ी चीज हमें बाबा से सिखने को मिलती है "एक बल, एक भरोसा" इससे बनायी अपनी स्थिति अचल-अडोल और बहोत शक्तिशाली।।
"जो विश्व महाराजन बनने वाले है चारो युगों में जिनके सर पे अनेक बार ताज आया वोह आत्मा इस संसार की सब से शक्तिशाली आत्मा भी है" डबल लाइट रूप में भी उनको देखा और अचल-अडोल और बहोत शक्ति-साली रूप में भी उनको देखा. हमारी दादी जानकी बाबा की एक बात बहोत कहती थी, में कहती हु नहीं कह रहा हु, बहोत कहती थी पहले- की जब भी वो बाबा के रूम में जाती थी तो बाब को ऐसे देखती थी जैसे विष्णु सेज सैया पर गीता ज्ञान में मग्न लेटा हुआ है गीता ज्ञान में निरंतर मग्न अवस्था श्रेष्ठ स्वमान धारी.
सबके प्रति जैसी भावनाए बाबा के मन में थी जो परोपकारी की बात आज बाबा ने कही वोह बाबा के जीवन में है.
"बाबा ने कहा बच्चो का सुख ही बाबा का सुख है", और "बच्चो की कोई कमजोरी मानो बाबा की कमजोरी है" बच्चो को

सुखी करने के लिए बाबा अपने आराम का, अपने समय का अपना सब कुछ त्याग करते हुए सब को सुख देते रहे, बहोत ज्यादा नीर-अहंकारी थे बाबा ।। यह सब बातें बाबा के जीवन में प्रैक्टिकल में थी ।।
सब से पहले हम अभ्यास भी करेंगे, दो बहोत अछे अभ्यास जो आज हम दोपहार के संदेशो में भी सुन चुके उपर भी और यहाँ भी जैसे हम बाबा का चित्र देखते है वैसे ही हम उपर देखेंगे... सूक्ष्म-लोक में दिव्य फरिस्ते रूप में बाबा को- कल उपर जब गुलजार दादी पहोंची थी सामको, तो उन्होंने एक बहोत ही सुंदर बात सुनाई थी जो उन्होंने पहले तो कभी नहीं सुनाई की जब बाबा अव्यक्त हुए और दादी ने सब को दिल्ही से सब को बुलाया और दादी भी आई और कहा बाबा के पास जाओ और बाबा को पहली बार दिव्य फरिस्ते रूप में देखा ऐसा पहले कभी नहीं देखा था, तो चले जरा हम सब भी अपने मन के चक्षुओ से सूक्ष्म-वतन में बाबा को देखे बहोत तेजस्वी दिव्य फरिस्ते के रूप... में जो हमारे सामने खड़े मुस्कुरा रहे है और अपनी दृष्टी से हमे निहाल कर रहे है... बाबा ने अपनी हज़ार भुजाएं सर के उपर फैला दी है... बाबा की हज़ार भुजो के छात्र छाया के निचे में हु... बाबा के नए बच्चे भी जो बहोत आये है सभी को अपनी स्थिति को तैयार करेंगे और इस स्थिति को तैयार करने का अर्थ है -"स्वयं को परमातम प्रेम में लीन करना, अशरीरी हो जाना ताकि हमारा चित्त लम्बे काल के लिए एकाग्र हो जाये."
बाबा हमे वरदान देंगे में वरदान के बारे में तिन बातें आपके समक्ष रखता हूँ. आज वरदान लेंगे हम- कम से कम एक- मुरली में भी आयेंगे उनमे से एक हम चुनेंगे की- आज से यह बात मेरे लिए वरदान है. याद रखेंगे "जिस बात को हम वरदान के रूप में स्वीकार करेंगे वोह हमारे लिए वरदान सिद्द होगी"
स्वीकार करना और उसका नशा हो जाये दोनों बातें. बहोत समय पहले बाबा ने कहा - "जो बच्चे लम्बा समय ईश्वरीय नशे में रहते है उनकी बुद्धि में शक्ति आ जाती है वरदानो को धारण करने की" बुद्धि धारणा शक्ति है. इस बुद्धि को ईश्वरीय नशे से, स्वमान से जिस ने जितना स्वच्छ कर लिया हो उसकी बुद्धि की धारणा सब से उतनी ही तीव्र हो जाती है. ऐसी आत्मा जो अपनी बुद्धि को ईश्वरीय नशे के द्वारा और ज्ञान के बल से स्वच्छ कर ले इसमें गंदकी जो भी आ गयी है उसे निकाल दे. वो गंदकी व्यर्थ संकल्पों की है, घृणा, इर्षा, द्वेष की है, तेरे मेरे और व्यर्थ संकल्पों की है " जो लम्बा समय ईश्वरीय नशे में है उनकी बुद्धि अनेक वरदानो को धारण कर लेती है.
तीसरी बात :- वरदानो में शक्ति है आग को पानी में बदलने की जीवन की बड़ी से बड़ी समस्या जो आग के सामान जलाकर सब कुछ नस्ट करने के लिए तैयार हो पानी के सामान शीतल बन सकती है ऐसे वरदान तो मुझे दो बाबा के वरदान याद आ रहे है में आप को याद दिला दू १) में विघ्न विनाशक हूँ. इसको हम न केवल स्वमान के रूप में स्वीकार करें बल्कि जीवन का अविनाशी वरदान बना दे और हम याद रखें जो आत्मा लम्बा समय अपने जीवन को निर्विध्न बना कर चलते है उन्हें विघ्न विनाशक का वरदान मिल जाता है. और जो संगम युग पर विघ्न-विनाशक की स्थिति में आ जाते है उन्हें द्वापर-युग के बाद भी विघ्नों में विजेता का आभास होता रहेगा वो विघ्न-विनाशक बनते रहेंगे क्यूंकि यह वरदान उनके साथ सदा-सदा के लिए चलता रहेगा और दुसरा वरदान है २)- "में मास्टर सर्व-शक्तिवान हूँ." सब से श्रेष्ठ स्वमान भी है, टाइटल भी है, वरदान भी है. इसको तो हम सभी को अपने जीवन में समा ही लेना है. यह दोनों वरदान यह दोनों स्वमान हमारे जीवन की सब समस्या ओ को समाप्त करने वाले है.
मुझे आज की मुरली की एक बात बहोत प्रिय लगी मुझे याद आ रही है में आपको रिपीट कर देता हु जो बहोत अछे पुरुसार्थी है वोह इसको अपना लक्ष्य बना ले बाबा बोल रहे थे -बच्चे तुम्हे मेहनत करनी है स्वयं को शीतल करने की. यह विकारो की अग्नि आत्मा को जला रही है, ख़ुशी को नस्ट कर रही है इसको हमे शांत करना है, शीतल करना है अपने चित्त को.
तो बाबा डबल लाइट फरिस्ता बने. बाबा ने गहन तपस्या की जीवन भर जो शास्त्रों में भी दिखाते है की कोई भी मनुष्य

जब ब्रह्मा से मिलने ब्रह्म लोक में पहोंचता है ब्रह्म लोक ही कहा है ब्रह्मा पूरी को. तो एक ही चीज पाता है की ब्रह्मा तपस्या में बैठे है. तो चलो तपस्या में - बाप सामान तपस्या की बाबा डबल लाइट बने. डबल लाइट का डबल अर्थ है. एक अर्थ है आत्मा भी लाइट और मन भी लाइट. बहोत हलके रहना और दूसरा अर्थ है आत्मा लाइट ज्योति और शरीर भी लाइट का. योग का अभ्यास करते करते हमारी कर्मेन्द्रिय दिनों दिनों शीतल और लाइट बनती जाती है और स्थूलता देह-भान की स्थूलता लोप होती जाती है. तो हम विचार करें ब्रह्मा-बाबा एक मनुष्य आत्मा ही थे इतना बड़ा कार्य सँभालते हुए, संसार को बदलने की जिम्मेदारी निभाते हुए, कैसे डबल लाइट रहे? बिलकुल हलके.
इसके लिए आत्मा को ज्ञान के बल की आवस्यकता होती है. ड्रामा के विभिन्न बातों के अभ्यास की उनके अनुभव की आवश्यकता होती है जो आज बाबा ने कहा सवेरे ब्रह्मा-बाबा ज्ञान की अथॉरिटी के साथ अनुभवों की भी अथॉरिटी थे. तुम भी यदि दोनों की अथॉरिटी बनो तो सेवा तीव्र से अति तीव्र गति को पाने लगे. तो हम सभी फरिस्ते है चले थोड़ी देर अपने स्वरुप को देखें में चमकती हुयी ज्योति अपने को बहोत तेजस्वी आत्मा देखेंगे, अपने स्वरुप को देखें... में तेजस्वी आत्मा... मैंने इस तन में प्रवेश किया है... भ्रकुटी सिंघाशन पर आकर बिराजमान हुयी...संकल्प करें...मेरा येही शरीर प्रकाश के शरीर में बदल गया...ट्रांसपेरेंट बॉडी हो गयी... और में आत्मा इसमें बिराजमान हु...में डबल लाइट फरिस्ता हु...पवित्रता का फरिस्ता हु...विश्व कल्याणकारी फरिस्ता...मेरे अंग-अंग से रंग-बेरंगी किरने फ़ैल रही है...ओम शांति.
बाबा फ़रिश्ते बने हम सब से पहले. बाबा जब अव्यक्त हुए तो बाबा से यह बात बहोत कही जाती थी की आप हमे छोड़ कर क्यूँ चले गए? बाबा उत्तर देते थे बाबा सबसे पहले फ़रिश्ता बने इस स्थापना के कार्य को बहोत स्पीड देने के लिए. फ़रिश्ता बंधन मुक्त होता है हमे फरिस्ता बनना है तो बन्धनों से स्वयं को निकलते चलना है. बंधन संसार में बढ़ रहे है और बन्धनों का एक ही बिज है -"में और मेरा". जो आत्मा जितनी सूक्ष्मता से में और मेरे के बन्धनों को रीअलाईस कर ले, पहचान ले इन दोनों को समाप्त कर ले वही आत्मा इन बन्धनों से मुक्त हो सकती है. हमे बंधन मुक्त होना तो है ही क्यूंकि हर मुरली में बाबा समय का चेलेंज कर हम सब के सामने रख रहे है, हम सब देख ही रहे है आज की मुरली मैं भी सवेरे था - प्रकृति को बहोत गुस्सा है, प्रक्रति सब से ज्यादा विनाश करेगी, और उसमें स्थापना भी समाई होंगी तो हम सभी फ़रिश्ता बनने के लिए बाबा की तरह में और मेरे से स्वयं को मुक्त करते चले, बाबा के सामान सर्वस्व त्यागी और बाबा के सामान महान तपस्वी.
बाबा के कमरे में आपने बाबा को देखा है विशेष कर के मधुबन में जहा बाबा की एक ही झलक मिलती है की बाबा गहन तपस्या में बैठे है और हम सब जानते है बिना त्याग के तपस्या होती नहीं. जो तपस्वी है वोह अवश्य ही महान त्यागी है और त्याग में भी बहोत सूक्ष्म मान और सन्मान की इच्छा का भी त्याग कुछ नहीं चाहिए.
योगी की बाबा डेफिनेशन (defination) देते आयें है साकार मुर्लियों में भी की राज योगी अर्थात मेरा कुछ भी नहीं ऐसी स्थिति की और जब हम चलते है तो हमारा योग, तपश्या एक आनंद बन जाता है, महेनत नहीं.
मुझे याद आ रही है बाबा की दो बातें बाबा साकार में थे. बाबा का यह जो कमरा है उपर पांडव भवन में जो बहोत सजा-सजाया है उस समय बहोत साधारण हुआ करता था जब बरसात आती थी तो उसमें से पानी बहने लगता था चुना लगा होता था दीवारों पर वोह गिरने लगता था नए मकान बने बाबा को कहा बाबा आप भी नए मकान में शिफ्ट हो जाओ बाबा ने कहा नहीं बच्चे बाप का तो रथ भी पुराना तो कमरा भी पुराना बाबा तो पुराने में ही रहेगा नए सब मकान बच्चो के लिए बाबा की घडी पुरानी हो गयी थी एक नयी घडी किसी ने दी बाबा के कमरे में लेके गए के बाबा आप की घडी बहोत पुरानी है यह नयी रख लेते है बाबा ने कहा नयी घडी बच्चो के लिए यह है मात-पिता का बेहद का स्वरुप, पालना का स्वरुप तो जिन आत्माओ को विश्व-महाराजन बनना है "उन्हें पालना का संस्कार नेचरल धारण करना ही

होता है" राजा दाता होता है और पालन करता होता है "जो दाता और पालन करता नहीं बनते वो राजा नहीं बन सकते". तो बाबा ने महान त्याग के द्वारा श्रेष्ठ तपस्या के द्वारा संपूर्ण फ़रिश्ते स्वरुप तो प्राप्त किया पिछली बार जो बाबा ने कहा ३१ दिसम्बर को लक्ष्य महान है बाप सामान बनने का तो लक्षण भी उस अनुसार महान धारण करो तो आज हम संकल्प ले की बाबा जैसा त्याग करके जहा अपने लिए कोई इच्छा नहीं थी हमे महान तपस्वी बनना है चले एक बार फिर एक सुंदर अभ्यास की और बहोत काम आएगी यह बात संसार का यह ८४ जन्मो का खेल पूरा हुआ. संकल्प करें ड्रामा अब समाप्त हो रहा है सब कुछ छोड़ कर मेरा और मेरे जो कुछ इस आँखों से देखते है जिन्हें हम मेरा और मेरे कहते है वोह छोड़ कर मुज आत्मा को वापिश चलना है... सभी स्वयं को उपर जाते हुए देखे... तेजस्वी आत्मा उड़ रही है अपने धाम की और... पहोंच गए परम धाम में... ज्ञान सूर्य सम्मुख है... उनकी किरणे मुज पर पड़ रही है...ओम शांति.

आज स्मृति दिवस है, हमे अपने जीवन में महान लक्षणों को धारण करना है ताकि हमे देखकर जो बाबा कह रहे है आज कल सब से बड़ी सेवा तुम्हारे चेहरे और चलन से किसी को भी बाबा की याद आए, तुम्हे देखकर आत्माओ का मिलन परमात्मा से होने लगे,तो हम याद रखेंगे हम सब भी देव-कुल की रॉयल आत्माए है. देव-कुल की रॉयल आत्माए, सब को याद होगा एक सीजन पहले बाबा ने कितनी बार कहा होगा तुम पूज्य पवित्र आत्माए कैसी कैसी हो- परमधाम में भी बाबा के समीप, परमधाम में भी तुम्हारा तेज और लाइट भी सबसे जयादा, देव-स्वरुप में भी तुम्हारी रोयल्टी, और भक्ति में भी तुम्हारे पूज्य स्वरुप की विधि पूर्वक पूजा, हम सभी याद करें में देव-कुल की रॉयल आत्मा हु क्यूंकि जैसी स्मृति हम करते है बहुत गहराई से स्वीकार करते हुए में देव-कुल की रॉयल आत्मा हु वैसे वैसे हमारे संस्कार, विचार, व्यवहार, बोल रॉयल होते जायेंगे हमे अपने अंदर बहोत रॉयल्टी लानी है बाबा के बच्चे बहोत रॉयल तो है ही.

में हमेशा कहता रहता हु मेरे सामने डबल विदेशी बैठे है. हमारे आबू में पहले से भी विदेशी आया करते थे जब बाबा साकार में थे हमारा म्युसियम बना तो भी विदेशी म्युसियम में रोज दस-बीस आ जाते थे. आबू वाले भी और हम सब भी उनको देखते थे उनके ड्रेस, उनके चेहरे जिनको देखने की इच्छा ही न हो. जब हमारे पास डबल विदेशी आने लगे तो फिर यह क्या कहने लगे आबू वासी भी बहोत अच्छा प्रभाव पड़ा, की देखो इनके पास आने वाले विदेशी कितने रॉयल है. "हम सभी रॉयल है" .

हमारे सभी के चेहरे, हमारे चेहरे से निकले हुए वाय्ब्रेसन, हमारे संस्कारों की गहरी छाप दुसरो पर छोड़ते है. में बहोत जगह सुनता हु कोई बहोत बड़ा गुरु गुप्त रूप में चेक करके जाता है , अभी अभी मुझे किसी ने सुनाया- बहनों से मिलता है बिलकुल गुप्त उसने कुछ नहीं बताया में कोन हु. और आके कमेंट्स दिये- आपकी बहने बहोत रॉयल है. क्यूंकि और बहोत सारे साधू-साध्वी इधर उधर घूमते हुए मुनि सब को लोग देखते है उनके चेहरे को देखते है सबके चेहरों पर थकान और हम सब के चेहरे ताजगी से भरे हुए जिसकी जनम-जनम की थकान बाबा ने हर ली है ऐसे रॉयल हम सब है तो हमे रोयल्टी उसके लक्षणों के रूप में हमे कायम रखनी है.

चलेंगे हम कुछ क्षनो के लिए उसी फिलिंग की और जो बाबा किया करते थे- में सुना दू आपको, जानकी दादी भी सुनाया करती है एक बार अचानक दादी जानकी हिस्ट्री हॉल में गयी दिन के समय, दिन का समय था तो क्या देखा? बाबा अकेला डांस कर रहा है ब्रह्मा-बाबा. दादी देखती ही रह गयी बाबा ने देखा और कहा बच्ची बाबा को तो नशा है यह बुढा शरीर छोड़ा और देखो ये बनूँगा बाबा को तो लक्ष्मी नारायण का ट्रांस-लाइट आया था. ये बनना है मुझे.

चले हम सब भी ज़रा जिस बाप के हम बच्चे है जो संसार में सब से रॉयल रहे है. अब भी में बता दू लाल लाइट में, लाल लाइट ही रखना -एक आर्य समाजी हमारे आश्रम में पहोंच गया उसने भी बताया नहीं, बाबा का चित्र देखा देखते ही

कहा की भले ही हम आपका विरोध करें भले ही आपका ज्ञान अलग - हमारा अलग लेकिन आपका बाबा बहोत रॉयल है ऐसा रॉयल व्यक्ति हमने कोई नहीं देखा. हमारे लिए नशे की बात है तो जैसे बाबा अपने भविष्य के नशे में मगन हो जाते थे और वर्तमान स्वरुप भूल कर चेहरे पर भविष्य का स्वरुप, श्रीकृष्ण का स्वरुप आ जाता था चले हम भी कुछ क्षनो के लिए अपने पहले जनम में, अपने नेक्स्ट जनम में यह शरीर छोड़ कर... मुझे देव स्वरुप में जाना है... में आत्मा अपने पहले जनम में हु... देवलोक में... देवस्वरूप में...सिर पर डबल ताज...चेहरे पर तेज...संपूर्ण सौम्यता...दिव्यता...पवित्रता...सर्व गुणों से संपन्न...देवलोक में हु...जहाँ प्रकृति का संपूर्ण सौंदर्य है...प्रकर्ति संपूर्ण रूप से सुखदाई है...अधिकार में है...संकल्प करें बाबा मुझे कैसा बनाने आया है...तो जिसके चेहरे भी दिव्यता रोयल्टी की अमिट छाप संसार पर छोड़ते है...ऐसे बाप के हम बच्चे है...

आज भी बाबा कह रहे थे सवेरे यह तो सारे संसार का बाप है ब्रह्मा-बाबा. ऐसे बाबा-समान हम भी तपस्वी बन कर, और सब के लिए श्रेष्ठ वायब्रेशन दे-कर उनके बच्चे होने का गौरव प्राप्त करेंगे. आज इस स्मृति दिवस पर, वरदानी दिवस पर, पुनः हम सभी का मिलन दोनों से होगा कई लोग सोचते है एक आता है या दोनों? बाबा ने स्पस्ट किया हुआ है- दोनों. किसी को कोई संसय की आवश्यकता नहीं शिवबाबा का रथ सदा सदा के लिए ब्रह्मा-बाबा ही है चाहे साकार में, चाहे आकार में उस माध्यम को लेकर ही बाबा निचे आते है. दोनों आते है तो संसार की दोनों महान अथॉरिटी, हस्तिया हमारे सम्मुख होगी सभी अपने चिंतन को अन्तर्मुखी करें...कितना सुंदर समय है स्वयं भगवान् और प्रजापिता ब्रह्मा दोनों हमारे भाग्य की श्रेष्ठ रेखा खीचने हमारे सम्मुख आ रहे है. हम दोनों को वेलकम करते है. अपने अंदर जितने सुंदर संकल्प हम अभी से क्रिएट करेंगे उतना ही अच्छा मिलन होगा. अभी से आप अपने को बहोत अधिक आनंद में, ख़ुशी में, नशे में स्थिर कर दे. वाह मेरा भाग्य. आज भगवान् को इस नैन द्वारा देखने का सर्व श्रेष्ठ भाग्य प्राप्त हुआ. देखेंगे न नैनो से? बाबा ने हमे नैन दिए है उन्हें देखने के लिए. इन्ही स्थूल चर्म-चक्सुओ से जिन्हें देखा नहीं जा सकता उसे देखने के लिए हम सभी के पास ज्ञान के दिव्या नेत्र है जीभर के आज उसे देख लेना है जिसको देखने के लिए हम युगों से इन्तजार करते थे जिसके लिए हम सोचते थे तुम क्षन भर के लिए अपने दर्शन दे दो हम तृप्त हो जायेंगे.

मुझे कई बार वहा रहते लोग मिल जाते है अभी भी एक कन्या मिली जो पहले ज्ञान लेती थी अब गुरु के पास चली गयी और कहा मेरे गुरु ने भगवान् के दर्शन किये है मैंने कहा बस? मेने पूछा अपने गुरु से पूछ ना भगवान् कैसा था जिसके दर्शन किये. हमने कहा हनुमान के दर्शन किये हो और कह दिया हो भगवान् के दर्शन कर लीये है.

कहाँ आत्माएं दर्शनों की प्यासी और कहा हम सब दिल से कहते है अनुभव करते है जो भगवान् है वो तो मेरा है. इस अपने पन के स्वरुप को कायम रखते हुए आज हम बाबा से मिलेंगे बहोत अछछे संकल्प करें, तुम्हारे दर्शनों के हम प्यासे थे अब तुम स्वयं हमारे जनम जनम की प्यास मिटाने आ-रहे हो. हे प्राणेश्वर आप को वेलकम है चले जरा आह्वाहन करेंगे हम सभी सच्चे मन से संकल्प करें, हे प्रक्रति पति, ज्ञान के सागर,हम सब की जीवन नैया के सहारे और खेवैया हम नैन बिछाएं बहोत प्यार से आपका आह्वाहन कर रहे है, हे सर्वशक्ति-मान, देखे ऊपर, अपना धाम छोड़कर निचे आ जाओ... हमारे प्यार भरे निमंत्रण को स्वीकार करते हुए सर्व-शक्तिमान निचे उतरने लगे...अपनी शक्तिओ की तेजस्वी किरने चारो और बिखेरते हुए निचे उतरने लगे है... सुखसम-लोक में ब्रह्मा-बाबा के तन में प्रवेश कर रहे है... अब दोनों निचे आ रहे है...एक अति दिव्य तेजस्वी दिव्य फरिस्ता आकाश मार्ग से निचे उतर रहे है... आ गए है हमारे सम्मुख... बाबा ने अपना वरदानी हाथ मेरे सर पर रख दिया है... प्राणेश्वर परम-पिता से सुंदर मिलन...उसका वरदानी हाथ सर पर... बाबा वरदान देते है बच्चे में हज़ार भुजाओं सहित तुम्हारे साथ हु...जब भी तुम मुझे बुलाओगे में अपना धाम छोड़ कर तुम्हे मदद करने के लिए आ जाउंगा तुम अकेले नहीं हो... ओम शांति

जो पहली बार आये है वोह भी ध्यान दे दादीजी जब यहाँ आएगी पहले बाबा को भोग स्वीकार कराया जाता है, भोग आ जायेगा, हम सभी एकाग्र चित्त होकर याद में बैठेंगे दादी भोग के साथ बाबा के पास जाएँगी उतने समय में हम सभी अभ्यास करते रहेंगे कभी स्वयं को भ्रकुटी सिंघासन पर बिराजमान तेजस्वी आत्मा देखेंगे उसके बाद सर्व-शक्तिमान से शक्तियों की किरने प्राप्त करेंगे दोनों अभ्यास. एक बार अपने को तेजस्वी मास्टर-सर्वशक्तिमान आत्मा देखेंगे दूसरी बार सर्वशक्तिमान को उपर देखेंगे और महसूस करेंगे उनकी शक्तिओ की किरने निचे फाउंटेन की तरह मुझ पर पड़ रही है. बहोत सरल रूप से हम सर्वशक्तिमान की शक्तिओ की किरणे की फाउंटेन के निचे बैठे है बाबा से बातें भी करते रहेंगे आह्वान करते रहेंगे बहोत प्यार से क्यूँकी आज का दिवस भी प्यार का दिवस है बाबा हम सभी के सच्चे प्रेम का रिटर्न देने आये है. हम प्यार के सागर के प्यार का भी अनुभव करेंगे... उसके बाद बाबा आजायेंगे.. सब को बार बार कहा ही गया है ताली नहीं बजायेंगे..दादी जब ध्यान में जाएँगी तो भी ताली नहीं क्यूँ की हम सभी बहोत मग्न अवस्था में बैठेंगे ताली तो स्थूल रूप है सफ़ेद लाइट में बजती है लाल लाइट में नहीं लाल लाइट में हम सभी बाबा के प्यार में मगन रहेंगे बाबा आजायेंगे हम सब को द्रस्ती देंगे बाबा की द्रस्ती- भगवानी की द्रस्ती, ज्ञान सूर्य की द्रस्ती, वरदान भरने वाली द्रस्ती, विघन नस्ट करने वाली द्रस्ती, हम सब के उपर पड़ेगी इस द्रस्ती का आज तक विभिन्न अनुभव अनेक आत्माओ को हुए है. चाहे आप पीछे बैठे है , गलरी में है, कोनो में है, चाहे आप उधर बैठे है जहा बाबा गर्दन मोड़कर उधर देखेंगे भी नहीं लेकिन बाबा की द्रस्ती तो अब से ही सब पर पड़ रही है. उसको पता है मेरा कोनसा रतन कहा बैठा है...हम अपनी द्रष्टि को ज्ञान सूर्य पर स्थिर रखेंगे बिलकुल वोह समय इतना सुंदर है की हम अपनी एकाग्रता के द्वारा परमातम शक्तिओ को स्वयं में भरते चलेंगे, खींचते रहेंगे जैसे परमातम शक्ति ओ को उसकी करंट उसकी शक्ति ओ को हम खिंच रहे है और उसका एक ही तरीका है अपनी बुद्धि को नेत्रों सहित उस पर स्थिर कर देना और यह महसूस करना की ज्ञान सूर्य की किरणे सम्पूर्ण होल में फ़ैल रही है, होल में ही नहीं बलके संपूर्ण संसार में ही फैलेगी क्यूंकि बाबा के अनेक बच्चे सभी सेंटर्स पर देस-विदेस में बाबा की द्रष्टि लेते रहेंगे और हमे मालूम ही होना चाहिए चाहे कोई हज़ार मिल दूर बैठा है उसे बाबा की द्रष्टि का सुख मिल जायेगा उस समय किसी भी वरदान को वरदान रूप में स्वीकार कर लेंगे तो द्रष्टि और हमारा संकल्प दोनों मिल कर वरदान बन जायेगा. द्रष्टि के समय कोई भी संकल्प न करें मुझे द्रष्टि नहीं मिली, में पीछे हूँ, आगे वालो को ही मिली याद होंगा बाबा ने पीछे कह दिया था की आगे वाले बाप को देखते है और बाप पीछे वालों को देखता है कितनी अछि बात है दोनों का काम पूरा हो जाता है. आगे वालो की द्रष्टि बाबा पर रहती है और बाबा की द्रष्टि पीछे वालों पर रहती है दोनों का काम पूरा हो जाता है तो हम सभी पूर्ण तृप्ती के साथ बहोत ध्यान देंगे कोई भी संकल्प व्यर्थ नेगेटिव न हो एक भी व्यर्थ संकल्प इस परम आनंद को समाप्त कर सकता है अब हम केवल यही आ जायेंगे, केवल यही ध्यान दे.. बहार अपने मन को जाने का कोई इजाजत नहीं देंगे बिलकुल भगवान् हमारे बिच में बैठेंगे तिन-घंटा सोचे हम सभी तिन घंटे परमात्म वाइब्रेशन में हम बैठेंगे जितना एकाग्र होंगे व्यर्थ बिलकुल नहीं उतना यह मिलन परम आन्द्कारी परम सुख कारी, वरदानो का डाटा बन जायेगा उसके बाद बाबा की मुरली चलेगी साड़ी मुरली इलिखने की आवश्यकता नहीं सभी जहा भी आप बैठे है मुख्या-मुख्या बात आप लिखेंगे और बाबा को बहोत अछि तरह देखेंगे दोनों चीज देखेंगे सामने ज्ञान सूर्य बाबा को भी और बाबा के चेहरे के हाव-भाव को भी यह बात में क्यूँ कह रहा हूँ आप महसूस करें चाहे आप टीवी पर देख रहे है बाबा जब बोलता है बाबा के अंदर हम सब के लिए सब आत्माओ के लिए कितना प्यार कितनी श्रेष्ठ भावनाएं कितना अपना पन भरा होता है वोह देखने की चीज थोड़ी है उससे हमे बहोत अधिक नशा होता है की बाबा हम से कितना प्यार करता है, उसके चित्त में हमारे लिए कितना अपना पन है हमारे अंदर भी वैसा ही अपना पन हो जाये मुरली भी सुनेगे और एकाग्रचित भी रहेंगे और इस संकल्प से मुरली सुनेंगे की भगवान् मुझसे बातें कर रहा है... मुझे कुछ याद दिल रहा

है... चाहे हमारी सभा बहोत बड़ी है अठारह-उन्नीश हज़ार की है लेकिन हम बिलकुल अछि तरह महसूस करें में अकेली-अकेला और मेरे सामने भगवान् बैठे है। उसके बाद बाबा को भोग लगता है, भोजन खिलाया जाता है आप सब देखने का आनंद लेंगे. कोई भी सोचेंगे कुछ नहीं में बहोत ही स्पस्ट कह दू हर बार एक-दो व्यक्ति अनुभव सुना ही जाता है कैसा अनुभव? की जब तक मुरली चली, बाबा आये, द्रष्टि मिली हमने बहोत आनंद लिया लेकिन जैसे भोग सुरु हुआ बाबा सब को खिलाने लगा हमारे मन में भी संकल्प उठा देखा हमे तो बाबा खिलाता ही नहीं बस सारा मजा किरकिरा हो गया बाबा तो रोज खिला रहा है. हम उसी का खा रहे है वोह हमे बहोत प्यार करता है ऐसी कोई भी भावना अपने अंदर जागृत नहीं होने देंगे और इस मिलन को अपने जीवन की यादगार बनायेंगे जब बाबा आ जाये तो अछे अछे संकल्प मन में रखेंगे कितना मेरा भाग्य कोन सामने बैठा है? भगवान् बोल रहा है, हम सुन रहे है कभी सोचा भी नहीं था की भगवान् इस तरह बैठ कर अपने बच्चो का सत्कार करेगा.

ऐसे सुंदर विचारो के साथ हम इस मिलन का बहोत आनंद लेंगे अब हम चलते है समाप्ति की और एक ही स्वरुप में बैठेंगे में तेजस्वी आत्मा सर्व-शक्तिवान की शक्तिओ के फाउंटेन के निचे बैठे है।